गिल्लू

लेखिका : महादेवी वर्मा

पाठ का सारांश

इस पाठ में एक छोटे चंचल जीव गिलहरी से लेखिका के अद्भुत प्रेम का परिचय मिलता है। गिलहरी का एक छोटा बच्चा शायद अपने घोंसले से गिर गया था जिसे अपना आहार समझकर कुछ निष्ठुर कौए उस पर अपने चोंच से प्रहार करने लगे। यह देखकर लेखिका ने उस गिलहरी के बच्चे की मदद की एवं उसे उन कौवों से बचाया। वह गिलहरी का बच्चा पूरी तरह से घायल हो गया था इसलिए लेखिका ने उसका उपचार किया एवं उसे जिंदा रखने के लिए रुई की पतली बत्ती को दूध में भिगोकर उसके मुँह में दूध डालने लगी। धीरे-धीरे वह स्वस्थ हो गया। लेखिका ने उस गिलहरी का नाम गिल्लू रखा। लेखिका ने फूल रखने की एक हल्की डलिया में रुई बिछाकर तार से खिड़की पर लटका दिया जो दो साल तक गिल्लू का घर रहा। गिल्लू लेखिका के पैरों पर चढ़ जाता था और सर से उतरकर भाग जाता था। वह दौड़ लगाने का काम तब तक करता था जब तक लेखिका उसे पकड़ न लेती। भूख लगने पर वह चिक-चिक

करके लेखिका को सूचना देता था। लेखिका के घर से बाहर जाने पर गिल्लू भी अपने अन्य गिलहरी दोस्तों के साथ खेलने चला जाता एवं लेखिका के लौटने पर वह भी लौट आता और उनसे अपना स्नेह जतलाता था। लेखिका के जब खाना खाती तब गिल्लू उनके साथ खाना खाने के लिए प्लेट पर बैठ जाता था। बहुत मुश्किल से लेखिका ने उसे थाली के पास बैठना सिखाया। गिल्लू का सबसे प्रिय भोजन काजू था। परंतु जब लेखिका अस्पताल में थी तब अन्य लोगों के द्वारा दिए गए काजू वह नहीं खाता था। लेखिका के घर लौटने पर वह उनके सिरहाने पर बैठकर अपने पंजो से उनके सिर पर हलका-हलका फेरने लगता था। एक गिलहरी की आयु प्रायः दो वर्ष होती है। शायद गिल्लू भी अपनी स्वाभाविक मौत से मरा था। उसके मरने से पहले उसके पंजे ठंडे पड़ गए थे इसलिए उसे बचाने के लिए लेखिका ने हीटर जलाकर उसके बदन को सेका परंतु उसे बचा नहीं पाई। सोनजुही की लता के नीचे गिल्लू की समाधि बनी। सोनजुही में एक पीली कली को देखकर लेखिका को गिल्लू की याद आ गई।